धर्म क्षेत्रे कुरु क्षेत्रे...

प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन

स्वदेशी जागरण मंच

४-५ सितम्बर १९९३

नई दिल्ली

सूत्रपात

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणा से स्वदेशी जागरण मंच द्वारा संचालित स्वदेशी आंदोलन वास्तव में विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के शोषण के खिलाफ आर्थिक आजादी की लड़ाई है । इस राष्ट्रीय आंदोलन को यह कहकर बदनाम करना कि यह भारतीय जनता पार्टी को लाभ पहुंचाने के लिए संघ द्वारा शुरू किया गया आंदोलन है, गलत है । रा० स्व० संघ ने दूरदर्शिता का परिचय देते हुए आज से १० वर्ष पूर्व ही इस आंदोलन का औपचारिक बीजारोपण कर दिया था । भारतीय मजदूर संघ व भारतीय किसान संघ के संस्थापक अध्यक्ष श्री दत्तोपंत ठेंगडी ने दस वर्ष पूर्व से ही जनता एवं सरकार को बहुराष्ट्रीय कंपनियों के हमलों से आगाह करना शुरू कर दिया था ।

२३ जनवरी, १९८२ को बंगलौर के टाउन हाल में स्वतन्त्रता सेनानी श्री खादरी शामन्ना की अध्यक्षता में हुए एक सम्मेलन में ठेंगडी जी ने प्रश्न किया था कि जब अपना देश पर्याप्त खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर है तो १५ लाख टन गेहूं का आयात क्यों किया जा रहा है ? श्री ठेंगडी ने कहा था कि इस प्रकार सरकार देश को विदेशी औपनिवेशकों के सामने गिरवी रखने की ओर बढ़ रही है । रुपए का अवमूल्यन और पेट्रोलियम पदार्थों की बढ़ती कीमतों का कारण भी उन्होंने पर-निर्भरता को ही बताया था । उन्होंने कहा था कि विडम्बना तो यह है कि आज

जब विश्व के अन्य देशों में पेट्रोलियम पदार्थों के मूल्य घट रहे हैं तो हमारे देश में लगातार इन पदार्थों की मूल्यवृद्धि हो रही है। श्री ठेंगडी ने इसी तरह के विचार २९ अक्तूबर से २ नवम्बर, १९८४ तक इंदौर में आयोजित भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्ताओं के अभ्यास वर्ग में भी व्यक्त किए थे।

आन्दोलन नया नहीं

संघ के लिए यह कोई नया आंदोलन नहीं है। सदियों से अपना देश विदेशियों के शोषण का शिकार होता रहा है। व्यापार करने आए अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान को कच्चे माल के बाजार के रूप में देखा। उन्होंने कच्चा माल यहां से ले जाकर उसी से बनी वस्तुओं को भारत में पुनः लाकर अधिक मूल्य पर बेचकर अधिक लाभ कमाना शुरू किया। ब्रिटिश सरकार की नीति के अनुसार हिन्दुस्तान का उपयोग वे कच्चे माल के स्त्रोत के रूप में करते थे।

अंग्रेज तो चले गए परन्तु हिन्दुस्तान में अभी उनके द्वारा बनाई गई ऐसी नीतियाँ जारी है जिसमें पूंजीपतियों व औद्योगिक घरानों को लाभ हो। औद्योगिक घरानों को लाभ दिलाने के तीन तरीके हैं— सस्ती दर पर कच्चा माल प्राप्त करना। अधिक उत्पादन करना एवं उत्पाद में लाभ अधिक हो इसके लिए सस्ता मजदूर, ज्यादा काम और उत्पादित वस्तु पर अधिक से अधिक मूल्य प्राप्त करना।

अंग्रेज यही करते थे। सस्ती दर पर कच्चा माल प्राप्त करना यानी किसान का शोषण। सस्ते माल की कीमत ज्यादा लेना अर्थात् उपभोक्ता का शोषण।

यही शोषण पूंजीवाद का आधार है। सरकार की छत्र छाया में ये तीनों प्रकार के शोषण आज भी चल रहे हैं। अप्रत्यक्ष रूप से शोषण कौन कर रहा है, इसकी जानकारी हमें नहीं हैं; लेकिन जिस समय यह सत्य उद्घाटित हो जाएगा, उसी समय विस्फोट होगा। तब सरकार और सरकारी नीतियों को बचा पाना मुश्किल

हो जाएगा । सरकार इस स्थिति से पूरी तरह परिचित है फिर भी किसानों, मजदूरों और उपभोक्ता के बीच परस्पर संघर्ष करा रही है । तीनों एक-दूसरे के विरुद्ध जहर उगलते हैं । तीनों को गुमराह करके सरकार अपना स्वार्थ साध रही है । कोई भी ऐसा संगठन नहीं है जो तीनों को सच्चाई बताए । अंग्रेजों के समय का दृश्य आज भी दिखाई दे रहा है । सरकार अपनी 'बांटो और राज करो' की नीति के सहारे देश को आर्थिक गुलामी की ओर धकेलने का षड्यंत्र कर रही है । भारतीय मजदूर संघ ने सबसे पहले इस षड्यन्त्र का पर्दाफाश किया ।

इस आर्थिक औपनिवेशिक हमले के प्रति देश के लोगों को सचेत करने के लिए राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के ५ आनुषंगिक संगठन संस्कार भारती, अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत, भारतीय किसान संघ, भारतीय मजदूर संघ और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् कई वर्षों से जनजागरण कर रहे हैं ।

यहां यह उल्लेख करना समीचीन होगा कि इस दिशा में सर्वाधिक सघन जन जागरण अभियान अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने चलाया । यह अभियान देशव्यापी था और इसका प्रभाव भी जनता के बीच गहराई तक पड़ा । आर्थिक उपनिवेशवाद के खतरों से सावधान करने के लिए रा० स्व० संघ ने स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित करना भी आवश्यक समझा इसीलिए इस विषय को संघ शिक्षा वर्ग के पाठ्यक्रम में रखा । ऐसी विषम परिस्थिति में इन कंपनियों के कार्यों व व्यवहारों से सावधान करने के लिए गत वर्ष दीपावली के दिन कलकत्ता में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय बैठक हुई । इसमें निश्चय किया गया कि स्वदेशी के प्रति लोगों में प्रेरणा उत्पन्न करने के लिए स्वदेशी जागरण अभियान का पखवाड़ा पूरे देश में मनाया जाए । इस निश्चय को आकार मिला २२ नवम्बर, ९१ को नागपुर में । इस बैठक की अध्यक्षता भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक अध्यक्ष दत्तोपंत ठेंगडी ने की । बैठक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री हो० वे० शेषाद्रि भी उपस्थित थे ।

बैठक में कुछ मुख्य बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा हुई । मसलन, यह अभियान रा० स्व० संघ एवं इससे संबंधित किसी अन्य संगठन के नाम से न हो । 'स्वदेशी जागरण मंच' इसका संचालन करेगी । क्षेत्रीय भाषा के अनुसार नाम में परिवर्तन कर सकते हैं, परन्तु 'स्वदेशी' शब्द का प्रयोग अनिवार्य होगा ।

इस अभियान में प्रांतीय अथवा स्थानीय स्तर पर औपचारिक कार्यसमिति (अध्यक्ष, मंत्री, कोषाध्यक्ष) न बनाई जाए । केवल एक संयोजक, नियंत्रक व अन्य सभी सदस्य मात्र रहे । इसी बात को ध्यान में रखकर केन्द्रीय स्तर पर संयोजक मंडल का.गठन किया गया ।

इस अभियान में ध्यान रखा गया है कि संघेतर संगठनों के लोग भी इसमें शामिल हों । इसमें सर्वोदय तथा स्वदेशी का समर्थन करने वाले विचार के लोग शामिल हों ।

केन्द्रीय समिति के संयोजक है डा० म० गो० बोकरे, पूर्व कुलपति, नागपुर विश्वविद्यालय तथा सदस्य हैं श्री कुप्० सी० सुदर्शन, श्री दया कृष्ण, श्री बापू साहेब पुजारी, श्री बिंदु माधव जोशी, श्री लज्जा राम तोमर तथा श्री मदन दास ।

सफल संघर्ष

१२ जनवरी, ९२ को इंका सरकार की आर्थिक नीतियों और साम्राज्यवादियों के खिलाफ संघर्ष का बिगुल बज गया । इस तिथि को स्वामी विवेकानंद का जन्मदिवस भी था । पूरे देश में शुरू हुए इस अभियात्त को आशातीत सफलता मिली । बजट प्रस्तुति के बाद आर्थिक नीतियों में परिवर्तन, रुपए का अवमूल्यन, औद्योगिक नीति निर्धारण का विरोध करने वाले विभिन्न विचारों के लोग भी इस अभियान से आ जुड़े ।

श्री दत्तोपंत ठेंगडी कहते हैं, 'हम लोगों को भविष्य द्रष्टा कहना उचित नहीं है ।द्रष्टा तो कोई और था । उनके पास संग्रहीत विचारों को जन समुदाय में लाने का काम हम लोग करते हैं । हम तो 'हेड लोड वर्कर' (सिर पर बोझ ढोने वाले मजदूर) हैं । विचार तो उनका है, परंतु लोगों की दृष्टि में विचार हमारे समझे जाते हैं । हमें लोग विचारों का धनी समझते हैं, लेकिन वस्तुस्थिति ऐसी नहीं है ।'

विभिन्न सरकारों द्वारा लागू की गई गलत नीतियों के परिपालन के दुष्परिणामों के प्रति द्वितीय सर संघचालक श्री गुरुजी ने १९६५ में ही चेतावनी दे दी थी । उस समय पाकिस्तान के साथ जल बंटवारे को लेकर विवाद चल रहा था और विदेशी पूंजी के दबाव में आकर भारत सरकार ने ऐसा समझौता स्वीकार किया था जो देश की सम्प्रभुता के लिए खतरा था । उस समय भी श्री गुरुजी ने स्पष्ट कहा था, कि विदेशी संस्थाओं के दबाव के कारण सरकार ने यह समझौता किया है । यदि इसी प्रकार की प्रवृत्ति बढ़ती गई तो वह दिन दूर नहीं, जब देश विदेशियों का आर्थिक उपनिवेश बन जाएगा ।

आज जब हम वस्तुस्थिति पर नजरे डालते हैं तो १९६५ में श्री गुरुजी द्वारा व्यक्त आशंका सच साबित होती दिखाई देती है । अतएव विदेशी पूंजी के साम्राज्यवाद के विरोध तथा आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था के पक्ष में २७ वर्ष पूर्व शुरू किए गए स्वदेशी अभियान की गंगोत्री तो श्री गुरुजी ही है । यह सत्य इतिहास के मानना पड़ेगा ।आज उन्हीं के विचारों को जन-जन की आवाज बनाने वाले अभियान को शक्तिस्त्रोत के रूप में बाला साहब देवरस का वरदहस्त प्राप्त है ।

(वेणु गोपालन
पांचजन्य)

पुनश्च हरिः ॐ

प्रिय बंधु — भगिनीगण, २नवंबर २९, १९९२

इस द्विदिवसीय बैठक के लिए यहां उपस्थित हुए आप सब स्वदेश भक्त बंधु भगिनियों का मैं हृदय से स्वागत करता हूं ।

ठीक एक वर्ष पूर्व (दि. २२ नवंबर, १९९१ को) नागपुर में हुई इसी तरह की एक बैठक में 'स्वदेशी जागरण मंच' की स्थापना हुई थी । उस बैठक में अखिल भारतीय स्वरूप की पांच संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित थे । 'मंच' के निर्माण के साथ-साथ मंच की केन्द्रीय संयोजन समितिका भा निर्माण किया गया था, और स्वदेशी जागरण अभियान की सामान्य रूप रेखा भी बनाई गई थी । उसके अनुसार पिछले एक वर्ष यह अभियान चलाया गया ।

स्वदेशी जागरण के लिए उपयुक्त साहित्य निर्माण करने का सुझाव उस बैठक में आया था । तदनुसार साहित्यकी निर्मिति सभी भारतीय भाषाओं में तथा अंग्रेजी में हुई और उसका विस्तृत वितरण भी हुआ । इस अवधि में नवनवीन स्वदेशभक्त साहित्यिकों से भी सम्पर्क प्रस्थापित हुआ ।

अभियान के प्रथम चरण में निम्न सायक्लोस्टाईल्ड् साहित्य विभिन्न प्रदेशों में

भेजा गया था । इसके आधार पर अपने प्रदेश की परिस्थिति के अनुसार हर प्रदेश अपनी भाषा में साहित्य निमिति करे यह योजना थी । इसके पश्चात् नियमित मुद्रित साहित्य का प्रकाशन प्रारंभ हुआ ।

प्राथमिक साहित्य

१) Economic Imperialsim or Recolonization - - Dayakrishna

२) Swadeshi Economy for war of Economic Independence against Economic Imperisalism - - Dr. M. G. Bokare

३) Boycott Mutnationals and their Products -- Sajinarayan

४) आर्थिक स्वाधीनता की लड़ाई - - शिरीष केदारे

५) स्वदेशी आन्दोलन - - हरेन्द्रकुमार (पटना)

६) स्वदेशी - विदेशी उत्पादनों की सूची

मुद्रित साहित्य

जून १९९२ में प्रकाशित साहित्य (दिल्ली से)

७) तीसरा विकल्प - दत्तोपन्त ठेंगडी

८) आर्थिक स्वाधीनता की लड़ाई -- शिरीष केदारे

९) On the Intellectual property Rights -- दत्तोपंत ठेंगडी

१०) स्वदेशी - विदेशी उत्पादनों की सुधारित सूचि (जून १९९२)

नवंबर १९९२ में प्रकाशित साहित्य (दिल्ली से)

११) बौद्धिक सम्पदा का प्रेत -- दत्तोपन्त ठेंगडी

१२) स्वदेशी अर्थव्यवस्था - - बैजनाथ राय

१३) The Resource Crunch Trap - - M. Mohandas

१४) The Menace of Multinationals - Dayakrishna

अन्य सहयोगी संगठनों द्वारा प्रकाशित साहित्य

१५) स्वदेशी - बिन्दुमाधव जोशी (ग्राहक पंचायत पुणे) - जनवरी ९२

१६) स्वदेशी आंदोलन - पृष्ठभूमि एवम् ऐतिहासिक आवश्यकता सुदर्शन (बड़ा बाजार, कुमार सभा पुस्तकालय, कलकत्ता) अप्रैल ९२

१७) स्वदेशी क्यों - मदन दास (अभाविप, कानपुर), नवंबर १९९२

१८) Restructing India's Polity - The Swadeshi Way - सुदर्शन, निखिल चक्रवती, गुरुमूर्ती (VIGIL) मद्रास -मई १९९२.

१९) प्रतिबंधित दवाइयों की सूची - मुम्बई (जन. ९२)

२०) इसी तरह स्थानीय उत्पादनों की सूचिया भी जारी की गई थी ।

विशेषांक

पांञ्चजन्य (दिल्ली)विवेक (मुंबई)

स्वस्तिका (कलकत्ता)ORGANISER (Delhi)

विक्रम (बंगलूर)जन्मभूमि (कोची)

(अन्य भारतीय भाषाओं में प्रकाशित साहित्य का इसमें समावेश नहीं हैं ।)

प्रस्तावित साहित्य

१) HINDU ECONOMICS -- Dr. M. G. Bokare (१४ जनवरी, ९३)

(इस सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि भारतीय मजदूर संघ के प्रदान स्व.

मनहरभाई मेहता की " The War of Economic Independence Against Foreign Economic Imperilism" यह इस विषय पर प्रथम पुस्तिका सन १९८९ में प्रकाशित हुई थी ।)

नागपुर बैठक में यह भी तय हुआ था कि जागरण के नित्य कार्य के अलावा विभिन्न प्रदेशों में इस जागरण के सघन अभियान के हेतु एक पखवाडा मनाया जाय. और हर प्रदेश अपनी सुविधा के अनुसार पखवाडे का कालविधि निश्चित करे । सभी प्रदेशों ने इस निर्णय को ठीक ढंग से क्रियान्वित किया ।

यह सोचा गया था कि यह मंच गैर - राजनीतिक तथा सर्वसमावेशक रहे । हर प्रदेश में सर्वसमावेशकत्व की दिशा में प्राथमिक प्रयत्न किये गये । कुछ स्थानों पर यह प्रयास संतोषजनक रहा । 'स्वदेशी जागरण मंच' की मुंबई समिति इसका एक उदाहरण है । अन्य स्थानों पर भी विभिन्न विचारधाराओं के स्वदेशभक्त बंधुओं को एक मंच पर लाने का प्रयत्न हुआ । इसमें कुछ स्थानों पर आंशिक सफलता अति सीमित तथा अपर्याप्त है । यह भी अनुभव किया गया कि इस दिशा में सुनियोजित प्रयास सभी स्थानों पर किये गये तो अपेक्षित यश निश्चित रूप से प्राप्त हो सकता है, क्यों कि विभिन्न विचारधाराओं, दलों तथा संस्थाओं में बंटे जाने के बावजूद सभी व्यक्तिओं तथा व्यक्तिसमूहों में स्वदेशभक्ति जागृत है । और इस एक बिंदु पर, शेष सभी मतभेदों को भूलकर, एक मंच पर आने की मानसिक तैयारी सबकी हो सकती है । देश का सार्वजनिक जीवन में फैले हुए वायुमण्डल के कारण हर एक व्यक्ति तथा व्यक्ति समूह सर्वप्रथम यह परीक्षा लेना चाहेगा कि 'मंच' के संयोजकों के उद्देश्य विशुद्ध हैं या नहीं । हमारे उद्देश्य विशुद्ध होने के कारण सबको अपने साथ लाने में हम अवश्य यशस्वी होंगे किन्तु इसके लिए सतत, व्यापक तथा सघन क्रियाशीलता की आवश्यकता है ।

नागपुर बैठक में हमारे लिए प्रेरणादायक बात रही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के

सरकार्यवाह आदरणीय शेषाद्रि जी की बैठक के अंतिम चरण में हम लोगों के बीच उपस्थिति । उनके प्रेममय सहवास तथा समयोचित मार्गदर्शन से हम सब लाभान्वित हुए । उस समय उनकी मूलगामी चिन्तन की प्रवृत्ति का हम सबको परिचय हुआ । आगे चलकर परमपूजनीय सरसंघचालक बालासाहेब देवरसजी का भी शुभाशीर्वाद इस अभियान को प्राप्त हुआ । अन्यान्य अवसरों पर प. पू. बालासाहेब ने दिये हुए तेजस्वी सन्देश सभी देशभक्तों के लिए स्फुर्तिदायक रहे । विशेषः नागपुर शाखा के पिछले विजयादशमी महोत्सव के अवसर पर उन्होंने इस उपक्रम का किया हुआ समर्थ समर्थन तथा दूरगामी मार्गदर्शन ऐतिहासिक महत्व का रहा । उसके कारण पूरे देश में स्वदेशी के बारे में उत्साह की एक नई लहर पैदा हुई ।

नागपुर बैठक की एक उपलब्धि यह भी रही कि केन्द्रीय संयोजन समिति के प्रमुख के रूप में हमें डॉ. म. गो बोकरे प्राप्त हुए । वे सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्रज्ञ हैं, तथा कुछ समय तक नागपुर विद्यापीठ के उपकुलपति भी रह चुके हैं । वे कट्टर मार्क्सवादी रहे हैं । कम्युनिस्ट पार्टी के एक चोटी के विचारक यह मान्यता उन्हें प्राप्त हुई थी । बौद्धिक प्रामाणिकता और वास्तव में शास्त्रशुद्ध ढंग से विचार करते रहने के उनके स्वभाव के कारण उनके विचारों में उचित परिवर्तन हुआ । उनकी 'Hindu Economics' यह पुस्तक आगामी मकर संक्रमण महोत्सव के शुभमुहूर्त पर प्रकाशित होने वाली है ।

उस प्राथमिक बैठक में केवल पांच संस्थाओं के प्रमुख पदाधिकारी उपस्थित थे । अ. भा. विद्यार्थी परिषद, सहकार भारती, अ. भा. ग्राहक पंचायत, भारतीय किसान संघ तथा भारतीय मजदूर संघ । किन्तु प्रत्यक्ष अभियान में और भी कई संस्थाओं ने पूरी शक्ति के साथ हिस्सा लिया । उन सभी संस्थाओं के प्रतिनिधियों को इस बैठक में निमंत्रित किया गया है । किन्तु जहां प्रत्यक्ष अभियान में और भी कई संस्थाओं ने पूरी शक्ति के साथ हिस्सा लिया । उन सभी संस्थाओं के

प्रतिनिधियों को इस बैठक में निमंत्रित किया गया है । किन्तु जहां नागपुर में हर संस्था के सभी पदाधिकारी निमंत्रित थे, यहां इस बैठक में हर संस्था के केवल दो प्रतिनिधियों को ही निमंत्रित किया गया है । नव निमंत्रित संस्थाएं निम्न है ।

१) विद्याभारती, २) भारतीय शिक्षण मंडल, ३) राष्ट्र सेविका समिति, ४) प्रज्ञा भारती, ५) वनवासी कल्याण आश्रम, ६) स्वदेशी सायन्स मुव्हमेंट ७) शैक्षिक महासंघ, ८) विश्व हिंदू परिषद, ९) संस्कार भारती ।

अब तक के अभियान में यह ध्यान में आया कि इस उपक्रम में हमारी भगिनियों की भूमिका वैशिष्ट्यपूर्ण तथा महत्त्वपूर्ण हो सकती है । वास्तव में उन्होंने अब तक वैसा प्रत्यक्ष कार्य किया भी है । इस दृष्टि से उनका सहभाग इस बैठक के विचार विमर्श में रहे यह अनिवार्य प्रतीत हुआ । राष्ट्र सेविका समिति की प्रतिनिधियों की उपस्थिती के कारण इस त्रुटि की पूर्ति हो रही है ।

ठीक एक वर्ष के पश्चात् बुलाई गई यह बैठक प्रमुख रुप से संगठनात्मक विचार विमर्श के लिए है । इसके उद्देश्य तथा स्वरूप के विषय में कुछ क्षेत्रों में स्वाभाविकतः थोड़ी सी गलत धारणा हुई थी । क्यों कि लोगों को अधिकतर अभ्यास सभाओं-सम्मेलन-अधिवेशेनों का हुआ करता है । किन्तु अपना यह एकत्रिकरण उस स्वरूप का नहीं है । यह बैठक है । संगठनात्मक विचारविमर्श के लिए । इसमें सोचना है कि अब तक कार्य कितना हुआ है, और आगे की कार्य की दिशा क्या रहे । सभा - सम्मेलन- अधिवेशन आदि की कार्यवाही अलग ढंग की हुआ करती है । इस बैठक का हेतु वह नहीं है । अब तक हुए कार्य का प्रतिवृत्त तथा आगे दिशा के विषय में ठोस सुझाव- यह यहां अभिप्रेत है । हां, एक तरह से इस बैठक के समारोप के रूप में कल, याने दि. २२ नवंबर को एक सार्वजनिक सभा 'मंच' के तत्वावधान में आयोजित की गई है । उसमें स्थानीय तथा अखिल भारतीय कार्यकर्ताओं के भाषण होंगे । उस सभा का उद्देश्य 'मंच' की भूमिका का

प्रचार यह रहेगा । बैठक का उद्देश्य, सभा के उद्देश्य से भिन्न है । बैठक का यह स्वरूप ध्यान में रहा तो जितना अल्पसमय हमें उपलब्ध है उसका अधिकतम, रचनात्मक तथा उत्पादक उपयोग करने में हम सफल होंगे ।

प्रतिवृत्त प्रस्तुत करते समय हर प्रदेश तथा हर कार्यक्षेत्र में इस दृष्टि से हुई गतिविधियों का वृत्त आएगा ही । किन्तु उसके साथ ही निम्न एक दो बातों का उल्लेख आना भी उपयुक्त रहेगा ।

गत बैठक में यह तय हुआ था कि इस अभियान के दौरान जो भी कार्य होगा वह 'स्वदेशी जागरण मंच' के नामसेही होना चाहिये. विभिन्न संस्ताओं को कार्यकर्ता काम करेंगे, किन्तु तत्वावधान 'मंच' का ही रहेगा । यह भी सोचा गया था कि यह रचना अगली बैठक तक चलेगी, अगली बैठक में हम पुनर्विचार करेंगे कि यही रचना जारी रखी जाय, या उसमें कुछ परिवर्तन किया जाय । जैसे, 'स्वदेशी जागरण मंच' के साथ अपनी-अपनी संस्था का नाम भी जोडना । उदा. 'स्वदेसी जागरण मंच' (सहकार भारती) । इस बात पर यहां हम विचार करेंगे ही । किन्तु गत वर्ष 'मंच' के तत्वावधान में ही विभिन्न संस्थाओं ने अकेले ही या अन्य लोगों से मिलकर – जो कार्य किया उसका वृत्त प्रस्तुत होना चाहिए । वैसे ही जिन संस्थाओं के प्रतिनिधि गत बैठक में उपस्थित नहीं थे, उन्होंने भी इस अभियान में कुछ उल्लेखनीय कार्य किये है । उदाहरणार्थ, महिला जागरण की दृष्टि से राष्ट्रसेविका समिति ने किया हुआ कार्य, या माननीय रज्जूभैया की सलाह पर 'विद्या भारती' ने किया हुआ हस्ताक्षर संग्रह । अन्य संस्थाओं ने भी ऐसे कुछ उपक्रम किये हैं । इस सबका विस्तृत विवरण सदन के सामने आना चाहिए । इससे अब तक हुए कार्य की पूरी जानकारी सबको होगी । वैसे ही, एक दूसरे के अनुभव से हम सब लाभान्वित होंगे, और हममें से हरेक के चिंतन में कुछ नये आयाम जुड़ सकेंगे ।

कार्य के मूल्यांकन का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है, जिसके विषय में हम इस बैठक

में कितनी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं यह देखना है । स्वदेशी का प्रचार यह एक बात है । किन्तु उसके परिणामस्वरूप कितने व्यक्तिओं ने या परिवारों ने प्रत्यक्ष व्यवहार में विदेशी वस्तुओं का त्याग और उसके साथ ही स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग— कुछ न कुछ मात्रा में — प्रारंभ किया इसकी आंकड़ों के आधार पर जानकारी, यह दूसरी बात है । इसके लिए सर्वेक्षण की आवश्यकता हुआ करती है । एक ही वर्ष की अल्प कालावधि में नये अभियान का प्रचार संगठित करना और उसके परिणामों का सर्वकष सर्वेक्षण करना— ये दोनों कार्य सम्पन्न करना कठिन था, यह तो स्पष्ट है । तो भी किसी भी प्रदेश में या कार्यक्षेत्र में इस दृष्टि से कुछ जानकारी उपलब्ध हुई है तो वह बैठक में प्रस्तुत करना उपयुक्त रहेगा ।

हर प्रदेश में या कार्यक्षेत्र में विभिन्न विचारधाराओं के कितने लोगों का या संस्थाओं का सहयोग हमें प्राप्त हुआ, यह भी बताया जाना चाहिये । वैसे ही अपने प्रदेश में समाचार पत्रों तथा अन्य मीडिया का रुख इस अभियान के प्रति क्या रहा, यह भी जानाकारी देनी चाहिए ।

विदेशी पूंजी के हाथ बहुत लंबे हैं । लोगों को गुमराह करने की उनकी क्षमता असीम है । झूठे प्रचार की कला के विशेषज्ञ बहुत बड़ी संख्या में उनकी सेवाओं में हैं । अपने हितों की रक्षा के हेतु, तथा स्वदेशी जागरण को विफल बनाने के लिए विदेशी पूंजी ने इस कालावधि में कई हथकंडे अपनाये है । उनकी कार्यपद्धति के अनुसार प्रकट हथकंडे बहुत कम और अप्रकट ही अधिक हुआ करते है । स्थूल कम, सूक्ष्म अधिक । स्वयम् परदे के पीछे रहते हुए ये विशेषज्ञ दूसरे माध्यमों से गलत तर्कों तथा तथ्यों का धुआंधार प्रचार करते तथा करवाते हैं । सामान्य जन ऐसे दुष्प्रचार की शिकार आसानी से बनते है क्यों कि उसके पीछे विदेशियों का हाथ ऐसा अस्पष्ट संदेह भी उसके सरल मन में निर्माण नहीं होता । इस दृष्टि से आए हुए अनुभव भी सदन के सामने प्रस्तुत होने चाहिये ।

अपने प्रचार के प्रति सर्वसाधरण जनता की प्रतिक्रिया एवम् विशिष्ट वर्गों की प्रतिक्रिया क्या रही, यह अवश्य बताना चाहिये ।

उपरिनर्दिष्ट विशेष बातों के अलावा अभियान का सर्वसाधारण वृत्त तो प्रस्तुत किया ही जाएगा ।

प्रतिवृत्त के पश्चात् कार्य की अगली दिशा के विषय में विचार करना है । नागपुर बैठक में सोचा गया था कि आगे चलकर इस अभियान को एक और आयाम जोड़ना आवश्यक है । वह ने "उत्पादन खर्चा घोषित करो" यह मांग । वस्तु का प्रत्यक्ष उत्पादन खर्चा और मार्केट में रखी गई उसकी कीमत – इन दो बातों में आश्चर्यजनक अन्तर पाया जाता है । इतना अंतर होगा इसकी कल्पना भी आम आदमी नहीं कर सकता । एक ओर कृषि के क्षेत्र में उत्पादकों कों लाभकारी मूल्य भी प्राप्त नहीं हो रहा, सरकार द्वारा निर्धारित कीमतों से उनका उत्पादन खर्चा भी नहीं निकल रहा और दूसरी ओर औद्योगिक क्षेत्र के उत्पादक अनापशनाप मुनाफा कमा रहे । उत्पादकों को – उनका उत्पादन खर्चा निकालकर– उचित लाभांश प्राप्त होना चाहिये । यह बात तो समझ में आ सकती है । किन्तु 'उचित लाभांश' की कुछ परिभाषा, कुछ सीमा होनी चाहियें या नहीं ? इस दृष्टि से हर वस्तु का उत्पादन खर्चा घोषित होना आवश्यक है । उसके बाद उस वस्तु पर उत्पादकों को लाभांश कितना मिलना चाहिए इस पर शास्त्रीय चर्चा हो सकती है । किन्तु अब तक चल रहा उस तरह उपभोक्ताओं का असीम शोषण आगे नहीं चलने देनाचाहिए ।

'उत्पादन खर्चा घोषित करो' यह नियम सभी उत्पादकों पर समान रूप से लागू होना चाहिये । देशी उत्पादक तथा विदेशी उत्पादक– दोनों पर ।

यह मांग और एक दृष्टि से आवश्यक है । विदेशी पूंजी के एजण्टों ने यह गलत

प्रचार चलाय 'स्वदेशी जागरण मंच' के पीछे प्रेरणा वास्तविक स्वदेश भक्ति की नहीं है । देशी पूंजी पतियों ने अपने निजी लाभ के हेतु 'मंच' के कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित किया है । विदेश से आने वाली जिस वस्तु का बहिष्कार किया जाएगा उस वस्तु को बनाने वाले जिस वस्तु का बहिष्कार किया जाएगा उस वस्तु को बनाने वाली देशी उद्योगपति को उस वस्तु पर चाहे जितना मुनाफा लेने की खुली छूट मिल जाएगी । यह प्रचार दबी जबान से बडे पैमाने पर चलाया जा रहा है । 'उत्पादन - खर्चा घोषित करो' इस मांग के कारण इस दुष्प्रचार की हवा ही निकल जाती है । हमारी यह मांग दोनों पर— विदेशी तथा देशी उत्पादकों पर लागू है । उसके कारण उपभोक्ताओं का शोषण करने की दोनों की क्षमता समाप्त हो जाती है । और एक असमर्थनीय गलत धारणा का अपने आप निराकरण हो जाता है ।

इस मांग को सम्पूर्ण मंच के द्वारा उठाया जाय, या मंच में सम्मिलित हुए आर्थिक क्षेत्र से संबंधित संस्थाओं तक ही अभी इस दायित्व को सीमित रखा जाय, इस पर अगली बैठक में विचार होगा ऐसा नागपुर के बैठक में तय हुआ था । इस पर हम यहां विचार करेंगे ।

नागपुर बैठक में तय किया गया था कि स्वदेशी जागरण के नित्य कार्यक्रमों के साथ ही उसके सघन प्रचार के लिए एक पखवाडा भी मनाया जाय । किन्तु इसमें सहभागी होने वाले देशभक्तों की सुविधा — असुविधा को ध्यान में रखकर यह भी तय किया गया कि हर प्रदेश इस पखवाडे के लिए उपयुक्त समय स्वयम् निश्चित करे । इस वर्ष भी निर्धारित नित्य कार्यक्रमों के साथ सघन प्रचार के लिए एक पखवाडा या सप्ताह मनाने का विचार उपयुक्त होगा क्या, यह विचार यहां करना है । मनाने का निर्णय हुआ तो यह भी सोचना पड़ेगा कि ऐसे सप्ताह या पखवाडे का समय क्या रहे । क्यों कि इसमें सक्रिय होने वाले देशभक्तों के सामने

और भी राष्ट्रीय महत्व के आव्हान है । सप्ताह या पखवाडे के समय का निर्णय राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के प्रकाश में करना होगा ।

वैसे ही उस अवधि में करणीय कार्य के स्वरूप पर भी विचार करना है । गतवर्ष के समान प्रचारकार्य तो सघन रूप से होना ही चाहिये । किन्तु इस वर्ष क्या हम इस कार्य को कोई नया आयाम भी जोड़ सकते हैं ? जैसे, जिन शासकीय, औद्योगिक, शैक्षणिक या अन्य संस्थाओं में थोक खरीदी होती है— उदा. चपरासियों की वर्दियों के लिए कपड़े की थोक खरीदी— उन संस्थानों के संचालकों से मिलकर उन्हें प्रार्थना करना कि उनकी सम्पूर्ण खरीदी स्वदेशी वस्तुओं की ही हो । ऐसे और भी कुछ आयाम हो सकते हैं क्या ? जो नये हो तथा व्यावहारिक भी ।

नागपुर बैठक में निश्चय हुआ था तदनुसार वैकल्पिक स्वदेशी — विदेशी वस्तुओं की सूचियां मंच की ओर से प्रकाशित हुई । ये सूचियां प्राथमिक स्वरूप की तथा अपूर्ण थी, यह स्पष्ट है । उसी समय यह भी सूचित किया गया था कि इस विषय में नई जानकारी जैसे-जैसे प्राप्त प्राप्त होगी वैसे-वैसे वह प्रकाशित की जाएगी । यह कार्य चल रहा है । यह भी सही है कि इस समय हमारा ध्यान उपभोक्ता वस्तुओं तथा दवाइयों तक ही सीमित है । किन्तु इस कार्य को निरपवाद रूप से चलाने की दृष्टि से यह आवश्यक है कि 'स्वदेशी' तथा 'विदेशी' (उद्योग) की शास्त्रशुद्ध परिभाषा प्रथम निश्चित हो । इसकी शास्त्रशुद्ध कसौटियां तय की जाय । गहन तथा सूक्ष्म चिंतन के पश्चात् ही इस विषय का निर्णय हो सकता है । कुल मिलाकर आज की औद्योगिक रचना इतनी उलझन वाली हो गई है कि उपयुक्त कसौटियां तुरन्त तय करना यह सरल कार्य नहीं है । यह कार्य हमें इस बैठक में पूरा करना है ।

साथ ही और एक पहलू पर विचार करना है । आज हम सभी उपभोक्ता-वस्तुओं पर ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं । यह तो जारी रखना ही है । किन्तु इसके साथ ही दो या तीन नित्योपयोगी उपभोक्ता वस्तुओं को (जैसे, टुथपेस्ट, साबुन आदि) अपना

प्रमुख निशाना बनाकर उन पर प्रचार अधिक केन्द्रित किया तो उससें कुछ अधिक ठोस परिणाम प्राप्त हो सकते है क्या ? इस के दोनों, (अस्ति-नास्ति), पक्षों पर इस बैठक में विचार होना उपयुक्त रहेगा ।

पिछली बैठक के बाद, बीच की कालावधि में परिस्थिति में एक गुणात्मक परिवर्तन आया है । अपना कार्य प्रारंभ हुआ उस समय कुछ सद्‌भावनापूर्ण बन्धुओं के मन में यह सन्देह था कि विदेशी आर्थिक साम्राज्य के विषय में स्वदेशी जागरणवालों का प्रतिपादन कहीं अत्युक्तिपूर्ण तो नहीं ? स्वदेशी का सिद्धान्त तो अच्छा ही है, किन्तु आर्थिक गुलामी का जो चित्र ये लोग प्रस्तुत कर रहे हैं, वह अतिरंजित तो नहीं ? अब डंकल प्रस्तावों के कारण उनका वह सन्देह भी दूर हो गया है । किन्तु यह भी सत्य है कि सर्वसाधारण जनता उन प्रस्तावों के स्वरूप से तथा परिणामों से प्रायः अपरिचित है । विशेष रूप से जिन किसानों पर इन प्रस्तावों के कारण वज्रघात होने वाला है वे इस विषय में पूर्ण रुपेण अज्ञानी अतएव उदासिन है । वे कल्पना ही नहीं कर सकते कि पश्चिम के विदेशी पूंजीवाले उनके कृषिमाल के लिए नई मण्डिया निर्माण करने के प्रयास में तृतीय विश्व के सभी देशों की कृषि नष्ट करना चाहते हैं । उद्योग के क्षेत्र में विदेशी आर्थिक साम्राज्य के अग्रदूत के रूप में विदेशी तकनीकी आ गई है और आ रही है और उसके अविवेकपूर्ण प्रयोग के भीषण दुष्परिणामों के विषय में सभी को गुमराह करने की दृष्टि से आकर्षक तथा व्यापक प्रचार जोरों से चल रहा है । अज्ञान के कारण सामान्य भारतीय नागरिक विदेशी ऋण के विषय में उदासीन है । वह सोचता है कि इस विषय से मेरा क्या लेना देना है, — यह सरकार का सिरदर्द है, सरकार इस को देख ले । संकट सभी दिशाओ से बड़ी तेजी से बढ़ रहा है । एक नया कार्य इस नाते अब तक हुई हमारी प्रगति असमाधानकारक नहीं है । किन्तु निरंतर बढ़ रहे आव्हानों के परिप्रेक्ष्य में हमारे कार्य की गति अति असंतोष जनक प्रतीत होती है । सबसे अधिक चिन्ता का विषय यह है कि कम-से-कम समय में इस जागरण को सर्वव्यापी बनाने की दृष्टि

से मंच के कार्य की रचना कैसी हो, इस विषय की स्पष्ट कल्पना कार्यकर्ताओं के मन में अब तक नहीं है । सार्वजनिक जीवन में लोगों को संस्था प्रधान रचना का ही अभ्यास सामान्यतः हुआ करता है । संस्था प्रधान संस्था रचना के कारण कार्य पर आने वाली मर्यादाओं से सभी परिचित है । इन मर्यादाओं के रहते हुए कार्य सर्वसमावेशक नहीं हो सकता, यह भी वे जानते हैं । कार्य को सर्वसमावेश बनाने की उनकी हार्दिक इच्छा भी है । किन्तु सोचते हैं कि आखिर— संस्था प्रधान रचना को छोड़कर और कौन सी रचना हो सकती है ? कोई भी कार्य करना है तो उसको संस्था के स्वरूप के ढांचे बिठाना पड़ेगा,— जिसमें अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महामंत्री आदि पदाधिकारियों का अस्तित्व अनिवार्य हो जाता है ।

इस बैठक में हमेंसोचना है कि हमारे उद्देश्य की दृष्टि से किस तरह की रचना 'मंच' के लिए अनुकूल रहेगी । परंपरागत, रूढ, संस्थाप्रधान रचना के आधार पर हम आज के अभूतपूर्व संकट का सामना नहीं कर सकते । असामान्य आह्वान असामान्य रचना की अपेक्षा करते हैं ।

आक्रमण जितना सर्वव्यापी है उतनी ही सर्वव्यापी कार्य रचना होना आवश्यक है । संस्था प्रधान रचना की भी अपनी एक विशेष स्वरूप की शक्ति हुआ करती है । सामान्य परिस्थिती में वह शक्ति परिणामकारक होती है, इच्छित— फलदायी सिद्ध हो सकती है । किन्तु उस रचना की मर्यादाओं के कारण संस्थाप्रधान रचना सर्वसमावेशक नहीं हो सकती । समान उद्देश्य को, तथा उसकी प्राप्ति के लिए मोटी तौर पर तय की गई सर्वसम्मत रणनीति को ध्यान में रखकर देश में विभिन्न मतावलंबी देशभक्त विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्तिगत रूप से या व्यक्तिसमूह के रूप में, स्वयंप्रेरणा से तथा स्वयम् की उपक्रमशीलता के आधार पर, अकेले-अकेले या अन्य व्यक्तिसमूहों से मिलकर, कार्य के लिए सोत्साह आगे बढ़ रहे हैं यह दृश्य संस्थाप्रधान रचना के फलस्वरूप निर्माण नहीं हो सकता । ध्येय की समानता तथा

स्थूलरूप से स्वीकृत की गई सर्वसम्मत रणनीति– ये दो बातें तो अनिरार्य हैं । किन्तु विभिन्न व्यक्तिसमूहों की अस्मिता को अक्षुण्ण, कायम रहने देते हुए उनकी सभी शक्तिओं का उपयोग विशिष्ट कार्य के लिए हो सके इसकी गुंजायश संस्था प्रधान रचना में हो नहीं सकती ।

इस संदर्भ में एक समानान्तर उदाहरण देना उपयुक्त रहेगा । किसी भी देश की सुरक्षा का आधार उस देश की जल-थल- अंबर की नियमित सेनाएं ही हुआ करती है । दूसरे देश पर आक्रमण करने की योजना हो तो उसका भी आधार नियमित सेनाएं ही हुआ करती है । किन्तु जब किसी पराये देश का सर्वव्यापी आक्रमण होता है, उस के दबाव के नीचे स्वदेश की प्रस्थापित संस्थाएं तथा सैनिकी रचनाएं नष्ट या निष्प्रभ हो जाती है, तब देशभक्त प्रतिकारक किस रचना का स्वीकार करते हैं ? औरंगजेब की विशाल आक्रमक सेना पर विभिन्न स्थानों पर विभिन्न समय स्वयंप्रेरणा से हमले करते हुए उसको हमेशा चिंताग्रस्त रखने का काम करने वाले गुरिला-युनिट्स को संस्थाप्रधान रचना संज्ञा दी जा सकती है क्या ? विभिन्न रचनाओं का महत्त्व विभिन्न स्वरूपों का हुआ करता है । अटक पर भगवा ध्वज लहराने वाले साबाजी शिंदे की नियमित सेना का अपना एक वैशिष्ट्यपूर्ण महत्त्व है, औरंगजेब की सेना की नींद हराम करने वाले धनाजी–संताजी के अनियमित गुरिला– युनिट्स् का अपना एक अलग वैशिष्ट्यपूर्ण महत्व है । विभिन्न परिस्थितियां विभिन्न रचनाओं की मांग करती है । स्वदेशी का अभियान पूर्ण रुपेण शांतिपूर्ण तथा अहिंसात्मक है । इस अभिमान में सहभागी होना यह सभी देशभक्तों का अधिकार तथा कर्तव्य है । अपनी-अपनी व्यक्तिगत या समूहगत अस्मिता को कायम रखते हुए सभी इसमें सहभागी हो सके ऐसी रचना का हमें विकास करना होगा । इस दृष्टि से पहली आवश्यकता यह है कि हममें से हर एक कार्यकर्ता के मन में यह भाव दृढ होना चाहिए कि 'स्वदेशी जागरण मंच' यह संस्था नहीं, जन–आंदोलन है । इस सृष्टि से उपयुक्त रचना का विचार हमें इस बैठक में करना है ।

वैसे ही यह जनआंदोलन ग्राम-ग्राम तक कैसे फैलाया जा सकता है, इसकी भी योजना यहां बनानी है ।

हमारे लिए यह हर्ष का विषय है कि सरकार्य आदरणीय शेषाद्री जी इस बैठक में हमारे साथ हैं ।

इस बैठक की व्यवस्था का दायित्व 'मंच' की मुंबई समिति के कार्यकर्ताओं ने सफलतापूर्वक निभाया है । हम सब इस सप्रेम आतिथ्य के लिए उनके हृदय से आभारी है । यह उल्लेखनीय है कि मंबीई समिति में विभिन्न विचारधाराओं के स्वदेशभक्त बंधु क्रियाशील है ।

बैठक के सभागृह का नाम 'बाबू गेनू सभागृह' रखा गया है । स्वदेशी आन्दोलन के इतिहास में 'बाबू गेनू' का स्थान वैशिष्ट्यपूर्ण है । दि. १२ दिसंबर १९३० को मुम्बई के कपड़ा बजार के इस कामगार ने कालबादेवी रोड पर विदेशी वस्त्रों की गाड़ी को रोकने के प्रयास में हौतात्म्य स्वीकार किया था । स्वदेशी के जागरण का सूत्रपात वैसे तो लाल-बाल-पाल तथा युवा सावरकर के समय ही हो चुका था । किन्तु इस प्रयास में प्रत्यक्ष आत्मबलिदान करने वाले प्रथम हुतात्मा बाबू गेनू थे । उनकी स्मृति स्वदेशभक्तों को सदैव प्रेरणादायक रहेगी । इस संदर्भ में सामूहिक कार्यवाही के नाते सन १९३२ में हुई गोदी कामगारों की हड़ताल का भी उल्लेख यहां करना अप्रासंगिक नहीं होगा ।

एक वर्ष पूर्व इस आन्दोलन का श्रीगणेश हुआ । स्वातंत्र्य के द्वितीय युद्ध के प्रारंभ की घोषणा हुई । इस अवधि में जो तरह-तरह के अनुभव आये उनको, तथा परिवर्तित परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए इस बैठक में हम, संपूर्ण आर्थिक स्वतंत्रता के अपने चिरवांछित ध्येय के प्रकाश में, कार्य की आगमी दिशा तय करने

वाले हैं । हमारे संकल्प विशुद्ध होने के कारण हमारे निर्णय समुचित ही रहेंगे, इसमें सन्देह नहीं ।

इस कारण हमारी कल होने सार्वजनिक सभा का व्यावहारिक अर्थ होगा—

'पुनश्च हरि : ॐ'

धन्यवाद ।

भारतमाता की सेवा में भवदीय,

दत्तोपंत ठेंगडी
मुंबई
नवंबर २९, १९९२

निर्णायक संघर्ष की ओर

(४ सितंबर, १९९३)

मुंबई बैठक में यह निर्णय लिया गया था कि अगले वर्ष के उत्तरार्द्ध में स्वदेशी जागरण मंच का प्रथम अखिल भारतीय अधिवेशन दिल्ली में सम्पन्न होना चाहिये । तदनुसार यह द्विदिवसीय अधिवेशन आज यहां हो रहा है ।

यह संयोग की बात है कि यह अधिवेशन एक ऐतिहासिक महत्त्व के अवसर पर हो रहा है । मंच का कार्य नियमित, योजनाबद्ध रूप से चल ही रहा है । उसी के अन्तर्गत इस अधिवेशन का आयोजन किया गया है । किन्तु एक विशेष घटना के कारण अधिवेशन को ऐतिहासिक महत्व प्राप्त हो गया है ।

लोक सभा का पिछला सत्र दि० २७ अगस्त को ही समाप्त होने वाला था । उसको एक दिन के लिये और बढ़ाया गया । उद्देश्य बताया गया 'कुछ अति आवश्यक विषयों पर चर्चा ।' जिनमें प्रमुख विषय था डंकेल प्रस्ताव । किन्तु दि० २७ अगस्त को विषयों की रचना इस ढंग से की गई कि डंकेल प्रस्ताव पर चर्चा करने के लिये न्यूनतम समय भी उपलब्ध न हो सके । इस पर विपक्षी सांसदों ने सराकार से इस आश्वासन की मांग की कि सरकार किसी भी हालत में संसद की

अनुमति के बगैर इस महत्वपूर्ण विषय पर अंतिम निर्णय नहीं लेगी और गैट समझौने पर हस्ताक्षर नहीं करेगी । प्रधानमंत्री श्री नरसिंह राव ने ऐसा आश्वासन देने से इनकार किया । उन्होंने कहा कि जहां वे संसद की स्वीकृति की प्रक्रिया का औचित्य समझ सकते है वहां वे विपक्षी सदस्यों द्वारा मांगा गया आश्वासन देने में स्वयं को असमर्थ पाते है, क्योंकि अन्तरराष्ट्रीय मामले बाह्य परिस्थिति के कारण कभी-कभी इतने अधिक गंभीर हो जाते हैं कि उस अवस्था में अधिक प्रतीक्षा करना असंभव हो जाता है । ऐसी स्थिति में संसद की अनुमति की राह न देखते हुए किसी अन्तरराष्ट्रीय समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिये सरकार विवश हो सकती है ।

प्रधानमंत्री का यह कथन सरकार के गलत इरादों को निःसंदिग्ध शब्दों में प्रकट करता है । इस पृष्ठभूमि के कारण मंच के प्रस्तुत अधिवेशन को असाधारण महत्त्व प्राप्त हो गया है ।

दि० २२/११/९२ की शाम को मुंबई एकत्रीकरण का खुला अधिवेशन हुआ । उसकी कार्यवाही के कारण 'स्वदेशी जागरण मंच' की सर्वसमावेशकता का परिचय सबको हुआ । श्रीमती रोझा देशपांडे तथा श्री एस्. आर. कुलकर्णी के भाषणों से 'मंच' की विशुद्ध देशभक्तिपूर्ण भूमिका स्पष्ट हुई । उस एकत्रीकरण की यह विशेषता उल्लेखनीय है ।

इसका एक अप्रत्यक्ष परिणाम यह भी रहा कि 'मंच' की सगंठनात्मक रचना के विषय में लिये गये निर्णय का आज की स्थिति में औचित्य आसानी से सबके ध्यान में आ सका । मुंबई बैठक के पूर्व, कम से कम समय में इस जागरण को सर्वव्यापी बनाने की दृष्टि से मंच के कार्य की रचना कैसी हो, इस विषय की स्पष्ट कल्पना कार्यकर्ताओं को नहीं थी । सार्वजनिक जीवन में लोगों को संस्था प्रधान रचना का ही अभ्यास सामान्यतः हुआ करता है । संस्थाप्रधान रचना के कारण कार्य पर आने

वाली मर्यादाओं से सभी परिचित थे। इन मर्यादाओं के रहते हुए कार्य सर्वसमावेशक नहीं हो सकता, यह भी वे जानते थे। कार्य को सर्वसमावेशक बनाने की सबकी हार्दिक इच्छा भी थी। किन्तु सोचते थे कि आखिर, संस्थाप्रधान रचना को छोड़कर और कौन सी रचना हो सकती है ? कोई भी कार्य करना है तो उसको संस्था के स्वरूप के ढांचे में बिठाना पडेगा,— जिस में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महामंत्री आदि पदाधिकारियों का अस्तित्व अनिवार्य हो जाता है। प्रदीर्घ चर्चा के पश्चात् सर्वसंमति से यह निर्णय लिया गया कि शीघ्र कार्य विस्तार की आवश्यकता को ध्यान में रखकर परंपरागत, गूढ संस्था प्रधान रचना को छोड़कर 'संयोजक'— 'समिति' प्रधान खुली रचना का ही स्वीकार संगठनात्मक दृष्टि से किया जाय। इसका औचित्य इस कारण भी सबको प्रतीत हुआ कि 'स्वदेशी जागरण मंच' को हम सब रूप में संस्था के नहीं, बल्कि जनआन्दोलन के रूप में विकसित करना चाहते है।

यह निर्णय कितना सुभोग्य था यह खुले अधिवेशन के स्वरूप से अनायास ही सबके ध्यान में आ गया। यह भी एक उल्लेखनीय उपलब्धि रही।

दि० २२ नवम्बर के पश्चात् एक पखवाडे के बाद ही देश के मनोवैज्ञानिक वायुमंडल में महान परिवर्तन आया। दिनांक ६ दिसंबर की अभूतपूर्व क्रांतिकारी घटना का यह अद्‌भुत परिणाम था। सभी देशभक्त तथा देश विरोधी तत्व उस वायुमंडल से सक्रिय रूप से प्रभावित हो रहे थे। यह वातावरण 'मंच' जैसे कार्य को बढ़ाने की दृष्टि से अनुकूल नहीं था। तो भी मंच के कार्यकर्ताओं के लिये यह अभिनन्दनीय बात रही की इस तरह के अनुकूल वातावरण में भी उन्होंने अपना कार्य तत्परता से जारी रखा।

भारतीय शिक्षण मंडल, बनवासी कल्याण आश्रम, स्वदेशी साइन्स मूवहमेण्ट,

शैक्षिक महासंघ, संस्कार भारती,– इन संस्थाओं ने अपनी-अपनी संस्था के मंच से तथा अपने विभिन्न संस्थागत कार्यक्रमों में स्वदेशी के प्रचार को अग्र क्रम दिया ।

विद्याभारती का स्वदेशी से संबंधित सघन तथा व्यापक रचनात्मक कार्य पूर्ववत् इन दिनों में भी चलता रहा, और कार्य की व्याप्ति बढ़ाने की दृष्टि से तत्परता का परिचय भी विद्याभारती ने दिया । छोटे बालकों के माध्यम से देशभक्ति तता स्वदेशी का प्रचार उनके परिवारों के बड़े लोगों में करना यह विशेषता उनके कार्य की रही है ।

राष्ट्र सेविका समिति ने प्रारंभ से ही स्वदेशी-अभियान हाथ में लिया था । समिति ने घर-घर में जाकर स्वदेशी का सन्देश परिवारवालों को दिया । उनके कार्य के कारण ही हम लोगों के ध्यान में आया कि इस अभियान में महिलाएं किस तरह सामरिक महत्व की भूमिका का निर्वाह कर सकती है । मुंबई बैठक के बाद समिति की सेविकाओं ने,–अपनी अन्य जिम्मेवारियों को सम्हालते हुए भी– स्वदेशी जागरण का कार्य पूर्ववत् सघनता के साथ जारी रखा । महिलाओं में, और उनके माध्यम से उनके परिवारों में, स्वदेशी का भाव जागृत करने का कार्य पहले से अधिक व्यापक मात्रा में उन्होंने किया । और वह भी किसी तरह का डिंडिम न बजाते हुए ।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने अपने सभी सम्मेलनों तथा कार्यक्रमों का एक अविभाज्य अंग इस नाते स्वदेशी को रखा ही, किन्तु इसके अलावा 'स्वदेशी' के लिये कई स्वतंत्र कार्यक्रम भी आयोजित किये । युवा पीढ़ी में स्वदेशी की रुचि पैदा करने का कठिन कार्य विद्यार्थी परिषद के कारण हो सका । वैसे ही डंकेल प्रस्तावों के सर्वनाशक स्वरूप के विषय में सर्वसाधारण जनता को सावधान करने का कार्य भी विद्यार्थी परिषद ने किया ।

सहकार भारती के तत्वावधान में महाराष्ट्र के ग्रामीण विभाग में कई सभाएं आयोजित की गई, जिनके द्वारा किसानों को यह बताया गया कि डंकेल प्रस्ताव किस तरह किसानों के, कृषि तथा सहकारी आन्दोलन के लिये खतरनाक है ।

अ० भा० ग्राहक पंचायत ने प्रारंभ से ही इस आन्दोलन को चुस्ती के साथ चलाया था । मुंबई बैठक के बाद वायुमंडल अननुकूल होते हुए भी पंचायत के कार्यकर्ताओं ने स्वदेशी का प्रचार तथा डंकेल प्रस्तावों के विषय में ग्राहकों का प्रशिक्षण-दोनों मोर्चों पर प्रशंसनीय सक्रियता का परिचय दिया ।

इस बीच दिनांक २० अप्रैल को भारतीय मजदूर संघ ने डंकेल के प्रति देश के मजदूरों का तीव्र रोष प्रकट करने के लिये दिल्ली के लाल किले पर एक विशाल प्रदर्शन आयोजित किया । देश के मजदूरों की डंकेल विरोधी ऐसी यह पहली ही रैली थी ।

भारतीय किसान संघ की सभी इकाइयों ने इस अवधि में देश के ग्रामीण अंचलों में सघन प्रचार किया । दि० ३१ जनवरी को गुजरात किसान संघ ने केवल इसी विषय पर गांधी नगर में प्रदर्शन आयोजित किया, जिसमें गुजरात के सभी जिलों से ४० हजार किसानों ने हिस्सा लिया । कच्छ-भुज में कारगिल के विरोध में वक्तव्य जारी करने का काम तो सभी वृत्तपत्रीय नेताओं ने किया; किन्तु प्रभावी विरोध-प्रदर्शन का कार्य केवल भारतीय किसान संघ ने किया । दि० २४ जून को हुए इस कारगिल तथा डंकेल विरोधी प्रदर्शन में कच्छ-भुज के ५० हजार किसान सम्मिलित हुए, जिनमें ८००० महिलाएं भी थी । प्रदर्शन में ट्रैक्टर, मैटाडोर, ट्रक, जीप, आदि वाहनों की संख्या १६०० थी ।

सारांश, दि० २२ नवम्बर के बाद, देश का वायुमंडल अन्य तरह का रहते हुए भी, स्वदेशी-जागरण कार्य, अनवरत रूप से अब तक चलता आया है ।

यद्यपि यह सही है कि एक नये अभियान के नाते स्वदेशी जागरण मंच की अब तक की गतिविधिया असमाधान कारक नहीं कही जा सकती, तो भी यह भी सत्य है कि यह आंदोलन अब तक उतना शक्तिशाली नहीं हो सका जितना विदेशी आर्थिक साम्राज्यवाद को रोकने के लिये आवश्यक था । एक तो सामान्य जनों से कटे हुए हमारे तथाकथित बुद्धिवादी उच्च मध्यमवर्गीय लोग स्वदेशी की गंभीरता को न समझने के कारण अपनी विदेशीपरस्त गलत आदतों को देश के हित में छोड़ने की आवश्यकता महसूस नहीं कर रहे । देश जीवन-मरण के संघर्ष में से गुजर रहा है इसका आभास गरीब लोगों की बस्तियों में लोगों को जल्दी होता है, किन्तु इस गरीब देश के वातानुकूलित बुद्धिजीवियों को यह साक्षातत्कार जल्दी नहीं हो सकता । उपभोगवादी जीवन की आदतें और ध्येयवादी व्यवहार-दोनों साथ-साथ नहीं चल सकते । और फिर अपने उपभोगवाद को ही प्रगतिशीलता मानने के पश्चात् उसको त्यागने की बात मन में निर्माण नहीं हो सकती । इन लोगों की संख्या अत्यल्प है । किन्तु आज की व्यवस्था में सामरिक महत्व के स्थान पर आसीन है । इस कारण सार्वजनिक नेताओं के मन पर इनका दबाव रहता है । यद्यपि देश के करोड़ों गरीब लोगों पर इनका कुछ भी प्रभाव नहीं है ।

दूसरी बात यह है कि स्वदेशी के प्रचार तथा डंकेल प्रस्तावों के विरोध इसका आज की स्थिति में कितना महत्व है, यह बहुसंख्य लोग ठीक ढंग से समझ रहे हैं, तो भी राष्ट्रहित की तुलना में अपने-अपने दलगत स्वार्थ को ही अधिक महत्वपूर्ण मानने की दशकों की आदत के कारण इस विषय पर सहमति होते हुए भी एक मंच पर आकर, कंधे से कंधा लगाकर खड़े होने की प्रवृत्ति का अभाव राजनैतिक दलों में दिखाई देता है । स्वदेशी के सूर्य का उदय हो यह सब चाहते है, किन्तु हर एक यह भी चाहता है कि मेरे मुर्गे के बांग देने पर ही भगवान सूर्यनारायण को ऊपर आना चाहिये, दूसरे किसी के मुर्गे के बांग पर यदि उनका उदय होता है तो उसका स्वागत नहीं किया जा सकता ।

स्वदेशी के मुद्दे पर देश में ही सर्वांगीण एकता निर्माण न होने के कारण इसका एक आवश्यक कार्य भी सघन रूप से करना कठिन हो जाता है । वह याने विदेशी आर्थिक साम्राज्यवाद से पीड़ित सभी अविकसित देशों के देशभक्तों के साथ सम्पर्क प्रस्थापित करना, और सभी अविकसित देशों के राष्ट्रभक्तों का संयुक्त मोर्चा साम्राज्यवाद के विरोध में निर्माण करना ।

इस कार्य का प्रारंभ तो हो चुका है; किन्तु जितनी शीघ्रता से यह आगे बढ़ना आवश्यक है उतनी शीघ्रता से इस कार्य का विस्तार नहीं हो रहा ।

और दूसरी ओर अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर इस विषय से संबंधित घटनाचक्र अत्याधिक तेजी से गतिमान हो रहा है ।

पूर्व साम्राज्यवादी देशों की आर्थिक स्थिति पहले से ही बिगड़ रही थी । इसी कारण गैट के टेबल पर चार नये विषय से आना उनके लिये अपरिहार्य हो गया था । किन्तु पिछले कुछ दिनों में उनकी अर्थव्यवस्था उनके लिये अनपेक्षित गति से गिरावट की ओर जा रही है । अमेरिका में यह खुले आम स्वीकार किया जा रहा है कि सन १९३०-३१ के पश्चात् आज के जैसी महान संकटमय स्थिति कभी भी निर्माण नहीं हुई थी । पीटर ड्रकर जैसे विशेषज्ञ सार्वजनिक रूप से स्वीकार कर रहे हैं कि उनकी पूंजीवादी व्यवस्था शीघ्र ही टूटने वाली है । रॉबर्ट सैम्युअलसन जैसे अमेरिकी पूंजीवाद के प्रमुख प्रवक्ता यह लिखने में संकोच नहीं कर रहे हैं कि द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् सर्वसाधारण अमेरिकी नागरिकों के मन में अमेरिका की समृद्धि के विषय में जो एक मोहमय धारणा निर्माण हुई थी वह एक मृगमरिचिका मात्रथी । यह सिद्ध हुआ है और इस कारण उनका 'एज ऑफ एनलायटनमेण्ट' का युटोपिया अब नष्ट हो रहा है । इस कारण उनका धैर्य अब समाप्त हो रहा है । अपनी अर्थव्यवस्था को जैसे-तैसे टिकाये रखने के लिये अविकसित देशों का पूर्णरूपेण

शोषण करने का उनका षड्यन्त्र पहले से ही तल रहा था। इस षड्यन्त्र के लिए अनुकूल, स्वजन विरोधी नेताओं को अविकसित देशों के शासन में बिठाना और कायम रखना, यह गोरखधंधा भी पहले से चल रहा था। किन्तु अब जागतिक शोषण की यह प्रक्रिया शीघ्रातिशीघ्र पूरी नहीं हुई तो अपनी अर्थव्यवस्थाकों जैसे वैसे टिकाना भी निकट भविष्य में असंभव हो जाएगा, यह धारणा सफेद साम्राज्यवादी देशों में बढ़ रही है। इसी कारण डंकेल के उत्तराधिकारी, गैट के महानिदेशक पीटर सूदरलैंड सोच रहे हैं कि यह सारी प्रक्रिया आगामी दि० १४ दिसम्बर तक पूरी होनी चाहिए। इस दृष्टि से तृतीय विश्व के सभी देशों पर अत्यधिक दबाव डालने का काम गैट ने प्रारंभ किया है। हमारे प्रधानमंत्री का उपरिनिर्दिष्ट कथन इसी दबाव के परिणाम स्वरूप है।

हम अनुमान लगा सकते है कि ऐसे दबाव का सफल प्रतिकार करने के लिये राष्ट्रीय इच्छाशक्ति का जागरण कितना विस्तृत पैमाने पर, और कितने शीघ्र होने की आवश्यकता है। कार्य बहुत कठिन है, और समय बहुत कम है। ऐसी ऐतिहासिक महत्त्व की घड़ी में हम लोग 'मंच' के प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन के रूप में दिल्ली में एकत्रित हो रहे हैं। यहां उपस्थित सभी प्रतिनिधि स्वयं राष्ट्रीय इच्छाशक्ति से ओतप्रोत हैं। परिस्थिति का हर एक नया आह्वान याने अपने कर्तृत्व का परिचय देने के लिये प्राप्त हुआ नया सुअवसर है, यह धारणा रखने वाले वीरव्रती ही इस सम्मेलन में भाग ले रहे हैं। परिस्थिति के कारण इस अधिवेशन को, ज्ञानतापूर्ण तथा संवैधानिक मार्गों से संघर्ष चलने वाले दायित्वपूर्ण देशभक्तों का 'वॉर कौन्सिठ' (युद्ध समिति) यह स्वरुप प्राप्त हो गया है। देश को यह विश्वास है कि बाह्य शक्तियां कितनी ही प्रबल क्यों न दिखाई देती हो, उनका प्रतिकार करने की वीजभूत क्षमताएं इस सनातन राष्ट्र में है, और इस राष्ट्र को उचित ढंग से आह्वान करने की मानसिक क्षमता यहां सम्मिलित हुए प्रतिनिधियों में है। संघर्ष की निर्णायक अवस्था में समस्या का सर्वांगीण विचार शांत चित से करना, परिस्थिति

के तनाव का परिणाम अपनी निर्णयशक्ति पर न होने देना— यही हमारी सांस्कृतिक परंपरा है। भगवान ने कहा है— 'युद्धस्व विगतज्वरः'। सब तरह के मानसिक तनावों से मुक्त होकर युद्ध करो। इसी मानसिकता में दृढ़तापूर्वक स्थिर रहते हुए आगामी रणनीति आप निश्चित करेंगे, यह विश्वास नियति को है।

मातृसेवा में भवदीय

दत्ता ठेंगडी,
१२९, साउथ एवेन्यू
नई दिल्ली -११००११

सिया राम प्रिंटर्स, पहाड़गंज, नई दिल्ली